

## हड्डी जोड़ने में महारथी पारंपरिक चिकित्सक विदेशों में हो रहे हैं लोकप्रिय

\* 40 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग

\* 110 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों एवं कीटों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य में टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने के लिये वनौषधियों के विषय में उपलब्ध पारंपरिक ज्ञान समृद्ध है। 40 से भी अधिक प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक रूप से होता है। यून तो हड्डी को जोड़ने में सैकड़ों पारंपरिक चिकित्सक लगे हुये हैं पर सर्वेक्षणों के माध्यम से 110 ऐसे विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की गई है जो कि पीढ़ियों से यह कार्य कर रहे हैं।

वनौषधि राज्य छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे इथनोबॉटैनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों में सामान्यतौर पर उगने वाली वनस्पतियों कोहा और बबूल का प्रयोग विशेषज्ञों के बीच लोकप्रिय है। कोहा की छाल का प्रयोग होता है जबकि बबूल के बीजों का प्रयोग होता है। कोहा की छाल को चूर्ण के रूप में आंतरिक तौर पर दिया जाता है। छाल का लेप प्रभावित भाग में लगाकर हड्डी को बिठाकर बांध दिया जाता है। एक ही समय में किया गया आंतरिक और बाहरी प्रयोग शीघ्रता से लाभ पहुंचाता है। बबूल के बीजों का प्रयोग आंतरिक रूप से लंबे समय तक किया जाता है। दक्षिण छत्तीसगढ़ में हड़जोड़ से बने पारंपरिक व्यंजन भी प्रचलन में हैं। इस क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक बेझिझक यह स्वीकार करते हैं कि उनके पूर्वजों ने हड़जोड़ के औषधीय उपयोग की जानकारी उन वन्य पशुओं से एकत्र की जो कि इसका प्रयोग इसी उद्देश्य के लिये करते हैं। राज्य के बहुत से भागों में हड़जोड़ की खेती भी की जा रही है पर पारंपरिक चिकित्सक वनों से एकत्र की गई हड़जोड़ के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक भेलवा नामक वनौषधि का प्रयोग आमतौर पर करते हैं। इससे बना हलवा पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। सामान्यतया ये चिकित्सक क्षारीय भूमि से एकत्र की गई वनस्पतियों का प्रयोग हड्डी रोगों के लिये करते हैं। देशज वनस्पतियों के अलावा विदेशी खरपतवारों जैसे युओपेटोरियम का नया उपयोग भी पारंपरिक चिकित्सकों ने ढूंढ निकाला है। वे इस विदेशी आक्रांता की सहायता से विशेष प्रकार के तेल का निर्माण करते हैं जो कि हड्डी के दर्द को आश्चर्यजनक रूप से कम करता है। बहुत से पारंपरिक चिकित्सक विषाबेल और गुग्गुलु जैसी वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। इन वनौषधियों के लिये उन्हें पड़ोसी राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। ग्रामीण अंचलों में केतकी नामक वनौषधि का प्रयोग निवासी हड्डी टूटने पर पशु चिकित्सा में करते हैं। हल्दी की कई जंगली जातियों का उपयोग भी प्रचलन में है।

हड्डी को जोड़ने में महारत रखने वाले विशेषज्ञ लोकप्रिय हैं। न केवल स्थानीय बल्कि देश विदेश के रोगी भी इन चिकित्सकों की सस्ती और उपयोगी चिकित्सा पद्धति का लाभ ले रहे हैं। बहुत से पारंपरिक चिकित्सक तो इस तरह की चिकित्सा के लिये कुछ भी नहीं लेते हैं। पंकज अवधिया का मानना है कि ये विशेषज्ञ सामाजिक सम्मान के हकदार हैं। इनके ज्ञान को मान्यता देकर आधुनिक प्रायोगिक विधियों की सहायता से इसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करना आवश्यक है।